

डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन, जोहानिन थियोलाजी, सत्र 10, यीशु के प्रति प्रतिक्रियाएँ, यीशु के साक्षी

© 2024 रॉबर्ट पीटरसन और टेड हिल्लेब्रांट

यह डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन द्वारा योहानिन धर्मशास्त्र पर दिए गए उनके व्याख्यान हैं। यह सत्र 10 है, यीशु के प्रति प्रतिक्रियाएँ, यीशु के साक्षी।

हम योहानिन धर्मशास्त्र पर जॉन के सुसमाचार के धर्मशास्त्र पर अपना पाठ्यक्रम जारी रखते हैं, और हम यीशु के प्रति प्रतिक्रियाओं के विषय पर आगे बढ़ते हैं।

हमने जॉन की शैली, संरचना, उद्देश्यों; "मैं हूँ" कथनों, संकेतों, और समय कथनों, और यीशु के प्रति प्रतिक्रियाओं के बारे में बात की है। हमने पहले ही इनमें से बहुत कुछ किया है, इसलिए मैं केवल संक्षेप में बताऊंगा। हालाँकि, मुझे आयतें पढ़ने की ज़रूरत है।

अध्याय 1, प्रस्तावना, इस विषय की घोषणा करती है, जैसा कि यह कई अन्य में करती है। यूहन्ना 1, 10, और 11 में, हमें यीशु के प्रति नकारात्मक प्रतिक्रिया मिलती है। 12 और 13 में, सकारात्मक प्रतिक्रिया मिलती है।

श्लोक 9, सच्चा प्रकाश, जो सभी को प्रकाश देता है, दुनिया में आ रहा था। प्रकाश के संदर्भ में अवतार है। हमने कहा कि प्रस्तावना में एक चिआस्टिक पैटर्न है।

सबसे पहले, यीशु को यीशु नहीं, बल्कि शब्द, फिर प्रकाश, फिर 9 में दुनिया में प्रकाश, फिर 14 में शब्द देहधारी हुआ। यानी, यह उलटी समानता है, शब्द, प्रकाश, शब्द देहधारी हुआ, दुनिया में प्रकाश नहीं, बल्कि शब्द, प्रकाश, दुनिया में प्रकाश, शब्द देहधारी हुआ। बीच में, दुनिया में प्रकाश और शब्द देहधारी हुआ, यीशु के प्रति दो प्रतिक्रियाएँ हैं।

इसलिए, वे एक रणनीतिक स्थान पर हैं, जो दर्शाता है कि प्रभु के अवतार के बाद उनकी सेवकाई के लिए दो प्रमुख प्रतिक्रियाएँ होंगी। प्रभु जो जीवनदाता है, पद 3, और परमेश्वर का प्रकटकर्ता, 4। अपने अवतार में, दुनिया में प्रकाश, शब्द देहधारी हुआ, वह परमेश्वर को प्रकट करेगा, और वह अनन्त जीवन देगा। लेकिन यह इतना सरल नहीं है क्योंकि उसे दो प्रतिक्रियाएँ मिलेंगी।

यहाँ उल्लेखित पहला, जो कि चिह्नों की पुस्तक को रेखांकित करने में सहायक प्रमुख है, यह है। सच्चा प्रकाश, जो सभी को प्रकाश देता है, संसार में आ रहा था। वह संसार में था क्योंकि वह संसार में आया था, पद 9, और संसार उसके द्वारा बना, जैसा कि यूहन्ना ने ऊपर पद 3 में कहा, फिर भी संसार ने उसे नहीं जाना।

यह एक बहुत बड़ा अस्वीकार है। दुनिया अपने निर्माता को अस्वीकार करती है, जो दुनिया को बचाने के लिए एक प्राणी बन गया। क्या इससे भी बड़ी अस्वीकृति हो सकती है? दुनिया ने अपने निर्माता, अपने ईश्वर को अस्वीकार कर दिया।

मैं समझता हूँ कि यह परमेश्वर ही है जो मनुष्य बना, देहधारी हुआ, परन्तु वह अपने घर आया ; इसे 19 से जोड़ते हुए, मुझे वह पद लिखना चाहिए, जहाँ यूहन्ना यूहन्ना से कहता है, देख तेरी माता, और मरियम से कहता है, देख तेरा पुत्र। यूहन्ना 19, 27. वह अपने घर आया, परन्तु उसके अपने लोगों ने उसे ग्रहण नहीं किया।

यह उसका अपना घर है क्योंकि उसने दुनिया बनाई है। और उसके अपने वाचा के लोग, इस्राएल, ने उसे बड़े पैमाने पर स्वीकार नहीं किया। यहाँ यीशु को यहूदियों द्वारा अस्वीकार किया गया है, जिसकी भविष्यवाणी पहले ही की जा चुकी है, अगर आप चाहें तो, प्रस्तावना में।

लेकिन एक और जवाब है। लेकिन उन सभी के लिए जिन्होंने उसे स्वीकार किया, और यह कोष्ठकीय खंड में समझाया गया है, जिन्होंने उसके नाम पर विश्वास किया, यीशु को स्वीकार करना यीशु में विश्वास करने से अलग नहीं है। उनके लिए, उसने उन्हें परमेश्वर की संतान बनने का अधिकार दिया।

जब तक जॉन अपने सर्वनामों का उपयोग नहीं कर रहा है, मेरी फ्रेंच भाषा की लापरवाही के लिए क्षमा करें। 1 जॉन में एक से अधिक बार वास्तविक बहस है कि क्या एक सर्वनाम पिता या पुत्र को संदर्भित करता है। दिन के अंत में, यह एक महान क्षण नहीं है, लेकिन यहाँ ऐसा लगता है कि उसने ईश्वर के बच्चे बनने का अधिकार दिया, जो कि अभी भी शब्द, अवतार शब्द या दुनिया में आने वाले प्रकाश को संदर्भित करता है।

यदि ऐसा है, तो यहाँ, पवित्रशास्त्र में अद्वितीय रूप से, यीशु दत्तक ग्रहण के लेखक हैं। वह पिता की भूमिका निभाता है। सामान्य रूप से, जैसा कि मैंने पहले कहा, नया नियम यीशु को पुराने नियम से परमेश्वर के सामान्य कार्यों का श्रेय देता है।

सृष्टि, विधान, मुक्ति, पूर्णता। यूहन्ना एक कदम आगे जाता है, और यह दिखाता है कि यीशु स्वयं को पुनर्जीवित करता है। यूहन्ना 10 में, दो बार, यह नए नियम के बाकी हिस्सों से एक कदम बेहतर है; एक कदम आगे, मुझे कहना चाहिए कि नए नियम के बाकी हिस्सों से बेहतर होने के बजाय, यह कहता है कि यीशु निर्वाचित व्यक्ति है।

वह वही है जो उद्धार के लिए लोगों को चुनता है। यूहन्ना 15, 16, और 19. केवल वहीं।

क्या यह धर्मग्रंथ में एकमात्र स्थान है जहाँ यीशु ने परमेश्वर की संतानों को गोद लेने में पिता की भूमिका निभाई है? मुझे ऐसा लगता है। जब तक कि उसका मतलब पिता से न हो और उसने ऐसा विशेष रूप से न कहा हो, उन सभी को जिन्होंने उसे स्वीकार किया, जिन्होंने उसके नाम पर विश्वास किया, उसने परमेश्वर की संतान बनने का अधिकार दिया जो अध्याय तीन की प्रत्याशा में पैदा हुए थे, न कि रक्त से, न ही शरीर की इच्छा से, न ही मनुष्य की इच्छा से।

मानव जन्म के बारे में नहीं बल्कि परमेश्वर से जन्म लेने के बारे में कहने के तीन तरीके हैं। यहाँ, जॉन रूपकों को मिलाता है। मुझे ऐसा लगता है कि गोद लेना, परमेश्वर की संतान बनने का अधिकार दिया जाना, मुझे गोद लेने जैसा लगता है।

मुझे लगता है कि आप कह सकते हैं कि यह पुनर्जन्म भी है, लेकिन मुझे ऐसा नहीं लगता। और फिर वह इसे पुनर्जन्म के साथ मिला देता है। बेशक, पॉल गोद लेने का शिक्षक है, लेकिन मैं जॉन मुरे और सिंक्लेयर फर्ग्यूसन से सहमत हूँ कि यहां, जॉन 1, 12, और 1 जॉन 3, 1, देखो पिता ने हमें कितना प्यार दिया है कि हमें भगवान के बच्चे कहा जाना चाहिए।

हालाँकि जॉन ने गोद लेने की तुलना में पुनर्जन्म के बारे में अधिक बात की है, लेकिन मैं जॉन मुरे और सिंक्लेयर फर्ग्यूसन से सहमत हूँ, जॉन 1:12, 1 जॉन 3:1 भी गोद लेने की बात करते हैं। पॉल गोद लेने के धर्मशास्त्री हैं। जॉन के पास भी इसके बारे में कुछ कहने को है।

बहुत ज़्यादा नहीं, लेकिन थोड़ा सा। इसलिए, सकारात्मक प्रतिक्रिया को श्लोक 12 में मनुष्यों द्वारा उनके विश्वास को अच्छा मानने के लिए जिम्मेदार ठहराया गया है। और फिर भी परमेश्वर को महिमा मिलती है, और उनके विश्वास का अंतिम आधार श्लोक 13 में परमेश्वर को दिया गया है।

आखिरकार, यह किसी इंसान का काम नहीं है, हालाँकि लोग सच में विश्वास करते हैं। भगवान किसी के लिए विश्वास नहीं करते, लेकिन वे विश्वास को सक्षम बनाते हैं। मुझे यहाँ ऐसा लगता है कि विश्वास पुनर्जन्म का परिणाम है।

यह पुनर्जन्म का उपोत्पाद है। 1 यूहन्ना 5:1 पूरे शास्त्र में सबसे स्पष्ट स्थान है। इफिसियों 2 में भी इसका संकेत मिलता है, लेकिन अब मैं विषय से हट गया हूँ।

यहाँ मुख्य बात है। चौथे सुसमाचार में कई विषय प्रस्तावना में प्रस्तुत किए गए हैं, जिसमें यीशु के प्रति दो प्रतिक्रियाओं का विषय भी शामिल है। यह शिक्षाप्रद है कि 10 और 11 में नकारात्मक प्रतिक्रिया 12 और 13 में सकारात्मक प्रतिक्रिया से पहले आती है, क्योंकि अध्याय 1:10 और 11 में नकारात्मक प्रतिक्रिया, प्रस्तावना पुस्तक के पहले भाग की रूपरेखा प्रस्तुत करती है, जो 12:37 पर समाप्त होती है।

हालाँकि उसने उनकी मौजूदगी में बहुत सारे चिन्ह दिखाए थे, फिर भी वे उस पर विश्वास नहीं करते थे। ओह, कुछ लोगों ने विश्वास किया, लेकिन परमेश्वर के पुत्र की सेवकाई के प्रति बहुसंख्यक प्रतिक्रिया उसके चिन्हों, उसके चमत्कारों और उसके उपदेशों, पिता द्वारा उसे दिए गए शब्दों, किसी और की तरह नहीं, नकारात्मक है। लेकिन शुक्र है, क्योंकि लोग विश्वास करते हैं, और अधिक अंततः, क्योंकि परमेश्वर उनमें काम करता है, प्रस्तावना के 13, 1:12 और 13 यीशु के प्रति एक और प्रतिक्रिया पेश करते हैं।

संकेतों की पुस्तक में कुछ विश्वासी हैं, लेकिन महिमा की पुस्तक का उद्देश्य, और केवल महिमा की पुस्तक ही नहीं, बल्कि यूहन्ना 20:30, और 31 का पूरा सुसमाचार, यीशु के प्रति सकारात्मक प्रतिक्रिया है। ये संकेत यह दर्शाने के लिए लिखे गए हैं कि आप विश्वास कर सकते हैं कि यीशु मसीह है, परमेश्वर का पुत्र है, और आप उसके नाम में जीवन पा सकते हैं। इसलिए यूहन्ना इस प्रकार पूरी पुस्तक की रूपरेखा प्रस्तुत करता है।

1:11 से 13, प्री-सेज, 12:37, और 20:30, और 31. अध्याय 12 और अध्याय 13 के बीच विभाजन दिखाने का एक और तरीका पूरी किताब को एक साथ बांधना है। निकोडेमस और सामरी महिला, मैं सिर्फ संक्षेप में बताऊंगा क्योंकि मैं उनके बारे में काफी बात कर चुका हूँ, मुझे लगता है।

उसके पास सब कुछ है। वह वाचा राष्ट्र का पुरुष है, एकमात्र चुना हुआ राष्ट्र है, एक यहूदी है, फरीसियों का सदस्य है, लोगों द्वारा उसका सम्मान किया जाता है क्योंकि वह कानून की अपेक्षा अधिक दान, प्रार्थना और उपवास करता है। और साथ ही, वह महासभा का सदस्य भी है।

मुझे लगता है कि मैंने पिछली बार इसे छोड़ दिया था। यहूदी शासक परिषद। और इज़राइल में एक महान शिक्षक।

वाह। और वह अंधेरे में है। अध्याय 3 में, यीशु ने दयालुता से लेकिन स्पष्ट रूप से कहा, तुम नहीं जानते कि तुम क्या कर रहे हो।

तुम्हें कुछ पता नहीं है। तुम इस्राएल के शिक्षक हो, और तुम नए जन्म को नहीं समझते। यहजकेल ने अध्याय 36 में कहा, मैं तुम्हारा पत्थर का दिल निकालकर तुम्हें मांस का दिल दूंगा।

यह अंतिम दिनों में होगा जब मैं अपनी आत्मा उंडेलूंगा। यहून्ना 3 में, कम से कम पद 8 में, हमें ऊपर से जन्म, नए जन्म के साथ आत्मा का उल्लेख मिलता है। हवा जहाँ चाहती है वहाँ चलती है, और आप उसकी आवाज़ सुनते हैं।

आप नहीं जानते कि यह कहाँ से आता है या कहाँ जाता है। तो, यह उन सभी के साथ है जो आत्मा से पैदा हुए हैं। मैं लिंडा बेलेविले से सहमत हूँ, जिन्होंने ट्रिनिटी में डीए कार्सन के तहत एमए किया था।

यह ट्रिनिटी जर्नल, न्यू सीरीज, वॉल्यूम 1 में प्रकाशित हुआ था। इस अंश पर उनका लेख, जहाँ वह केवल यहाँ जॉन में दिखाती है कि एनार्थस न्यूमा, यानी, बिना आर्टिकल के स्पिरिट शब्द, ईश्वर को संदर्भित किए बिना स्पिरिट शब्द, आर्टिकल के बिना, और आर्टिकुलर न्यूमा, आर्टिकल के साथ स्पिरिट शब्द के बीच अंतर है। स्पिरिट ईश्वर और ईश्वर के दायरे को संदर्भित करता है, यहजकेल 36 की पृष्ठभूमि के खिलाफ, और स्पिरिट पवित्र आत्मा को संदर्भित करता है। इसलिए, सच में, सच में, मैं तुमसे कहता हूँ, श्लोक 5, जब तक कोई पानी और आत्मा से पैदा नहीं होता है, ईएसवी आत्मा कहता है।

मुझे लगता है कि यह गलत है क्योंकि जॉन ने आत्मा नहीं कहा। ओह, चलो, आपको वहाँ लेख रखने की ज़रूरत नहीं है। यह सच है।

लेकिन अगर यहाँ कोई इच्छित विरोधाभास है, तो यह मेरे जोहानिन भिन्नता व्यवसाय के विरुद्ध है, है न? लेकिन मैंने कहा कि यह विशेष सामग्री में संभव है। और लिंडा बेलेविले दिखाती हैं कि वह पॉलीन विद्वान की तरह अधिक हो गई हैं, लेकिन वह अच्छी हैं। और मुझे लगता है कि उन्होंने इस पर अच्छी तरह से काम किया है।

यहाँ श्लोक 5 का अर्थ बताया गया है। जब तक कि तुम पानी से पैदा नहीं हुए हो, यहेजकेल द्वारा अपने ईजेकील 36:25 से 27 में भविष्यवाणी की गई अंतिम शुद्धि के साथ, मैं तुम्हें साफ पानी से धोऊंगा, और तुम साफ हो जाओगे, भविष्यवक्ता ने कहा। और पैदा होना, जब तक कि तुम पानी और आत्मा से पैदा नहीं हुए हो, दिव्य के दायरे का एक सामान्य संदर्भ है।

हम इसे श्लोक 6 में देखते हैं। जो शरीर से पैदा होता है, वह शरीर ही है। मनुष्य शरीर से पैदा होता है, पाप से नहीं, बल्कि मानवीय रूप से। यह मानव का क्षेत्र है।

कि यह 1:12 और 13 पर वापस प्रतिबिंबित हो रहा है। नया जन्म मनुष्य का नहीं है; यह भगवान का है। खैर, यह बात कर रहा है कि पुरुष और महिलाएँ क्या पैदा करते हैं, दूसरे मनुष्य।

और जो आत्मा से जन्मा है वह आत्मा है। यहाँ, ESV ने सही कहा है। पहले वाले में लेख है, लेकिन दूसरे प्रयोग में नहीं है।

जो पवित्र आत्मा से जन्मा है वह आत्मा के दायरे से संबंधित है। यह आध्यात्मिक है। यह कोई बड़ी बात नहीं है।

लेकिन श्लोक 8 में, हवा जहाँ चाहे वहाँ चलती है; आप उसकी आवाज़ सुनते हैं लेकिन यह नहीं जानते कि यह कहाँ से आती है या कहाँ जा रही है। ऐसा ही हर उस व्यक्ति के साथ होता है जो आत्मा से जन्मा है। अर्थात्, पुनर्जन्म में पवित्र आत्मा का कार्य सर्वोच्च, रहस्यमय और मानवीय ज्ञान से परे है।

हम इसका पूर्वानुमान नहीं लगा सकते, इसे नियंत्रित नहीं कर सकते, या इसे पूरी तरह से समझ भी नहीं सकते। हम कपड़े को लाइन पर लटकते हुए देखते हैं। अरे, यह एक पुरानी अभिव्यक्ति है।

हम देखते हैं कि पत्ते हवा में उड़ रहे हैं। हम जानते हैं कि हवा आ गई है। अब कपड़े बहुत कम ताने पर लटके होते हैं, हालाँकि कभी-कभी अमेरिका में ऐसा होता है। हम देखते हैं कि हवा कागज को उड़ा ले जाती है।

हम जानते हैं कि हवा आ गई है। हम हवा को उसके परिणामों से जानते हैं। हम हवा को उसी तरह नहीं देख सकते जिस तरह हम आत्मा को नहीं देख सकते।

हम उसे उसके परिणामों से जानते हैं। वह लोगों को नया जीवन देता है। निकोदेमुस, अगर मेरी समझ सही है, तो उसने अंततः ये बातें सीखीं।

उस समय वह उन्हें नहीं जानता था। उसे उन्हें जानना चाहिए था। इसके विपरीत, एक सामरी महिला के खिलाफ़ सब कुछ चल रहा है।

वह एक महिला है। वह एक सामरी है। वह अनैतिक है।

लेकिन नीकुदेमुस के विपरीत, जो अँधेरे में है, मैं उसे यीशु का कट्टर अस्वीकारकर्ता नहीं बना रहा हूँ। लेकिन अगर उसे अध्याय तीन में विश्वास है, तो इसे हम बाद में अपर्याप्त विश्वास कहेंगे। वह शत्रुतापूर्ण नहीं है।

मुझे लगता है कि वह उलझन में है। और सातवें अध्याय में, उसे श्रेय दें। वह कम से कम कहता है, देखो, हमारा कानून, जिसका आपने अभी उल्लेख किया है, आप कानूनविद, आप कानून का पालन करने वाले नागरिक, किसी को बोलने का अधिकार देते हैं।

हमें यह सुनने की ज़रूरत है कि यह शिक्षक यीशु के बारे में क्या कहता है। और अध्याय 19 में, वह यीशु के साथ, यहाँ तक कि क्रूस पर चढ़ाए गए यीशु के साथ भी अपनी पहचान बताता है। नीकुदेमुस अभी भी विश्वास नहीं करता है।

सामरी महिला विश्वास करती है और फिर एक महिला प्रचारक की जगह लेती है, जो शहर को प्रभु की ओर ले जाती है। प्रस्तावना 1:11 से 13 में स्थापित पैटर्न, जिसे निकोडेमस में पुनरुत्पादित किया गया है, एक नकारात्मक प्रतिक्रिया है, एक सामरी महिला, और फिर उसके लोग, साथी सामरी, एक सकारात्मक प्रतिक्रिया। ध्यान दें कि, फिर से, सामरी चौथे सुसमाचार में नायक हैं।

यीशु ने भले सामरी के दृष्टांत को नहीं दोहराया, लेकिन उन्होंने दिखाया कि वे सच्चे विश्वासी हैं, कम से कम उनमें से बहुत से लोग। यह पैटर्न बार-बार दोहराया जाता है। हमने कभी बताया था, आइए इसे फिर से देखें, 4:39 और उसके बाद।

बहुत से सामरी लोग यीशु पर विश्वास करते थे। ऐसा इसलिए क्योंकि हमने खुद उसे सुना था, 42. हम जानते हैं कि वह दुनिया का उद्धारकर्ता है।

यह एक आश्चर्यजनक कथन है। और यह यरूशलेम में नहीं, बल्कि सामरिया के सूखार में कहा गया है। परमेश्वर की कृपा बंधी हुई नहीं है।

ओह, यह सुसमाचार या उद्धारकर्ता, यीशु से जुड़ा हुआ है। लेकिन जहाँ वह जाता है, यह वहाँ जाता है। और हमने पहले ही ऐसा कर लिया है।

वह गलील जाता है; लोग उसका स्वागत करते हैं; यह अच्छा लगता है। लेकिन एक मिनट रुकिए। यीशु ने चौथे सुसमाचार में नहीं, बल्कि सिनॉटिक्स में कहा था।

यह एक ऐसी जगह है जहाँ जॉन सिनॉटिक्स पर निर्भर करता है। एक भविष्यवक्ता को अपने देश में कोई सम्मान नहीं मिलता। जब तक लोग संकेत और चमत्कार नहीं देखते, आप उन पर विश्वास नहीं करेंगे।

4:48. और फिर भी विश्वास है। यह गलील में दुर्लभ है।

लेकिन एक रईस आदमी है, एक अधिकारी जिसका बेटा मरने वाला है। और वह आदमी दिखावे पर विश्वास करता है और यीशु की बातों पर यकीन करता है। और उसका बेटा ठीक हो जाता है।

विश्वासों के बीच यह दोलन है, सामरी लोग। अविश्वास, गैलीलियन। विश्वास, कुलीन व्यक्ति।

अध्याय 7:40 से 43, यीशु के प्रति दो प्रतिक्रियाएँ। जब लोगों ने यीशु के अद्भुत शब्द सुने, "यदि किसी को प्यास हो, यदि किसी को प्यास हो, तो मेरे पास आए और पीए। एक मिनट रुको।"

पानी डालने की रस्म ईश्वर का सम्मान करती है, जो फसलों के लिए पानी देता है। यीशु खुद को ईश्वर के स्थान पर रख रहे हैं। अगर कोई आता है, कोई प्यासा है, तो वह मेरे पास आए और पीए।

प्रतीकवाद, रोटी, पानी, प्रकाश। यहाँ पानी है। उसके हृदय से जीवन जल की नदियाँ बहेंगी।

और उसने पवित्र आत्मा के विषय में यह कहा। श्लोक 40. जब उन्होंने ये शब्द सुने, तो उनमें से कुछ ने कहा, यह वास्तव में वह भविष्यवक्ता है जिसके बारे में मूसा ने निर्गमन 18 में भविष्यवाणी की थी।

दूसरों ने कहा कि यह मसीह है। ये सकारात्मक प्रतिक्रियाएँ हैं। मैं यह नहीं कह रहा हूँ कि मैं उनके विश्वास की डिग्री का मूल्यांकन नहीं कर सकता, लेकिन कुछ लोगों ने कहा कि यह गलील से आने वाला मसीह है।

क्या यह नहीं कहा गया है कि वह दाऊद की संतान है और बेथलेहम से है? वह मसीह कैसे हो सकता है? यह एक मिश्रित प्रतिक्रिया है। 43 स्पष्ट है। इसलिए, उनके बीच उसके बारे में मतभेद था।

मैं बिल्कुल यही कह रहा हूँ। हम इसे अध्याय 9 में देखते हैं। ओह, क्या हम इसे अध्याय 9 में देखते हैं। अध्याय 9 के अंत में, 9:38, यीशु कहते हैं कि एक अंधे व्यक्ति को शारीरिक और आध्यात्मिक रूप से ठीक करने के बाद, नेताओं ने यीशु के प्रति अपने दिलों को कठोर कर लिया। न्याय के लिए, मैं प्रकाश और अंधकार के बीच अंतर करने के लिए दुनिया में आया हूँ।

मैं दुनिया की रोशनी हूँ। और मैं उन लोगों पर अपनी रोशनी बिखेरता हूँ जो मेरे संपर्क में आते हैं और मेरे संकेतों को देखते हैं और मेरे शब्दों को सुनते हैं। मैं इसलिए आया हूँ ताकि जो अंधे हैं वे देख सकें।

यह अच्छी बात है। अगर यह आध्यात्मिक अभिव्यक्ति है तो वे अंधे हैं। उन्होंने आध्यात्मिक सत्य की भौतिक अभिव्यक्ति के रूप में अंधे आदमी को ठीक किया।

अंधे वे लोग हैं जो अपनी ज़रूरतों को देखते हैं, जो यीशु के प्रकाश में, दुनिया के प्रकाश में अपने आध्यात्मिक अंधेपन को देखते हैं। वह उन पर चमकता है। और वे यह नहीं कहते कि, अरे, मैं ठीक हूँ।

मैं महान हूँ। मुझे उसकी ज़रूरत नहीं है। वे कहते हैं, ओह, मैं अंधेरे में हूँ।

और वे विश्वास करते हैं। और यीशु उन्हें जीवन देता है। और वह अंधों को दृष्टि देने आया है।

और वह उन लोगों को अंधा करने आया है जो देखते हैं। एक श्लोक बाद में, वह दिखाता है कि इसका मतलब उन लोगों से है जो दावा करते हैं कि वे देख सकते हैं। वह अपने शब्दों और अपने कामों से उन पर भी चमकता है।

इस अध्याय में, वह कहता है, मैं दुनिया की रोशनी हूँ। और वह इसे एक अंधे आदमी को ठीक करके दिखाता है, पीट की खातिर। लेकिन वे देख नहीं सकते।

वे देख नहीं सकते। हम भी अंधे नहीं हैं, है न? नहीं। अगर तुम अंधे होते, अगर तुम अपनी आध्यात्मिक अंधता को स्वीकार करते और मेरे पास आते, जो दुनिया की रोशनी है, तो तुम देख पाते।

मैं तुम्हें माफ़ कर दूँगा। तुम्हें अनंत जीवन मिलेगा। यूहन्ना अनंत जीवन की बात करता है, माफ़ी से कहीं ज़्यादा।

लेकिन यह वहाँ है। और यह अध्याय 9 के अंत में यहाँ है। यीशु के प्रति दो प्रतिक्रियाएँ। यीशु ने समकालिक कथन को उद्धृत नहीं किया, जो भजन संहिता में वापस जाता है, शायद नीतिवचन में।

परमेश्वर अभिमानियों को नम्र बनाता है और नम्र लोगों को ऊँचा उठाता है। यह लूका 1 में मरियम की महिमा की तरह लगता है। यह पुराने नियम की शिक्षा है। यूहन्ना इसे उद्धृत नहीं करता, लेकिन वह इसे दिखाता है।

वह महान शिक्षक नीकुदेमुस को नीचा दिखाता है। वह सामरिया की संदिग्ध महिला को ऊँचा उठाता है। वह यहूदी नेताओं को नीचा दिखाता है।

तुम अपने आप को क्या समझते हो, तुम अंधे बेटे? यहाँ से चले जाओ। वह एक अंधे आदमी को महिमा देता है जिसे यीशु से शारीरिक दृष्टि और आध्यात्मिक दृष्टि मिलती है और जो परमेश्वर के राज्य और परमेश्वर की बातों को इस्राएल के नेताओं से ज़्यादा स्पष्ट रूप से देखता है। परमेश्वर के तरीके हमारे तरीके नहीं हैं।

अध्याय 11 में, चिन्हों की पुस्तक के अंत में, यीशु अपने मित्र लाज़र को कब्र से जीवित करते हैं। अध्याय 11 की आयत 45. इसलिए, जो यहूदी मरियम के साथ आए थे और जिन्होंने उसे देखा था, और जो कुछ यीशु ने किया था, उसे देखा था, उनमें से बहुतों ने उस पर विश्वास किया।

मेरे दोस्तों, इस पर सकारात्मक प्रतिक्रिया मिली है। हालाँकि, उनमें से कुछ फरीसियों के पास गए और उन्हें बताया गया कि यीशु ने क्या किया था।

और यह 53 की ओर ले जाता है। इसलिए, उस दिन से, उन्होंने उसे मौत के घाट उतारने की योजना बनाई। वे उससे नफरत नहीं करते थे।

वे अभी उसे खत्म नहीं करना चाहते थे। ओह, रोमन लोग आएंगे, हमारा मंदिर छीन लेंगे, हमारा शहर छीन लेंगे, यरुशलम छीन लेंगे। हम मुसीबत में हैं।

हमें इस आदमी को पकड़ना है। और यहीं पर कैफा ने यहूदियों के साथ-साथ अन्यजातियों के लिए भी मसीह के प्रायश्चित की अनजाने में भविष्यवाणी की। वैसे भी, प्रस्तावना में 1:11 से 13 में बताई गई यीशु की प्रतिक्रियाओं का पहले 12 अध्यायों में एक पैटर्न के अनुसार पालन किया गया।

मैंने पहले भी इसका जिक्र किया है। मैं संक्षेप में बताऊँगा कि चौथे सुसमाचार में, जैसा कि मैं कहता था, झूठे विश्वास का सिद्धांत शामिल है। यह बहुत विशिष्ट है।

इसमें से कुछ झूठ है। अपर्याप्त विश्वास एक बेहतर शब्द है। 2:23, पानी से शराब के बाद।

अब, जब वह फसह के पर्व पर यरूशलेम में था, तो बहुतों ने उसके द्वारा किए जा रहे चमत्कारों को देखकर उसके नाम पर विश्वास किया। संभवतः काना से भी अधिक। यीशु ने और भी बहुत से ऐसे चमत्कार किए जो उसकी पुस्तक में नहीं लिखे गए थे।

20:30. यहाँ उनमें से कुछ का संदर्भ दिया गया है। अच्छा, यह अच्छा लग रहा है, लेकिन यह अच्छा नहीं है।

आप कैसे जानते हैं? अगली आयत, लेकिन यीशु ने अपनी ओर से खुद को उनके हवाले नहीं किया। निश्चित रूप से, वह एक वफादार वाचा प्रभु है जो खुद को उन लोगों के हवाले करता है जो वास्तव में उस पर विश्वास करते हैं, लेकिन वे वास्तव में उस पर विश्वास नहीं करते हैं। इसलिए, उसने उनके कारण उन पर भरोसा नहीं किया क्योंकि इस बार, सिनॉप्टिक्स ने यह दिखाया।

और जॉन यह कहता है। आमतौर पर, यह इसके विपरीत होता है। वह जानता है। वह लोगों को अंदर और बाहर से आध्यात्मिक रूप से जानता है (अध्याय दो, श्लोक 25)।

उसे इंसानों के बारे में सिखाने के लिए किसी की ज़रूरत नहीं है। वह जानता है, वह अध्याय छह की शुरुआत से ही जानता था, कि कौन उस पर विश्वास करेगा। ओह, यह एक मुश्किल सवाल है।

और इस पर गौर करें। अध्याय छह का अंत करीब है। उसे शुरू से ही पता था कि कौन उसे धोखा देगा।

ओह, यह मुझे डराता है। क्या आप यह ज्ञान प्राप्त करना चाहेंगे? मैं नहीं चाहूँगा। हम यीशु के मनोविज्ञान को पूरी तरह से नहीं समझते हैं।

जैसा कि डेविड वेल्स ने अपनी पुस्तक इन द पर्सन ऑफ क्राइस्ट में दिखाया है, हम यीशु की आत्म-समझ को समझने में कुछ प्रगति कर सकते हैं, लेकिन उन्होंने इस ज्ञान का सामना कैसे किया कि यहूदा उन्हें धोखा देने वाला था? यह बात यहूदा के साथ उनके व्यवहार में कभी नहीं दिखी, जब तक कि यीशु की गिरफ्तारी या रात्रिभोज में उनकी भविष्यवाणी नहीं हुई। तुम में से कोई मुझे धोखा देने वाला है। यहूदा, जो मेरे साथ थाली में रोटी डुबोता है, उसे उसे धोखा देना होगा।

उन्होंने सोचा कि वह गरीबों के लिए कुछ दान कर रहा है या दावत के लिए कुछ खरीद रहा है। मैं ईश्वर के पुत्र के मनोविज्ञान को नहीं समझता, लेकिन शुक्र है कि अनुग्रह से हम ईश्वर के पुत्र पर विश्वास करते हैं। हम उसे जानते हैं और उससे प्यार करते हैं।

अध्याय आठ. यह बहस का विषय है. मुझे नहीं लगता कि यह पीटरसन होना चाहिए.

तुम्हें थोड़ा और चाहिए, थोड़ा और आगे बढ़ना चाहिए। इतना हठधर्मी मत बनो। खैर, मैं बस उन आयतों को पढ़ रहा हूँ जो एक के बाद एक आती हैं।

और ESV यहाँ विराम लगाता है। कुछ टीकाएँ कहती हैं कि पद 31, पद 30 के बाद आता है। ऐसा ही है।

और यह वही समूह है। दूसरे कहते हैं कि यह नहीं है, और यह एक अलग समूह है। खैर, मैं उस व्याख्या का सम्मान करता हूँ, हालाँकि मैं इससे असहमत हूँ।

यूहन्ना आठ की आयत 30 में, जब वह ये बातें कह रहा था, तो बहुतों ने उस पर विश्वास किया। इसलिए, यीशु ने उन यहूदियों से कहा जिन्होंने उस पर विश्वास किया था, वास्तव में यह एक अलग समूह है। मुझे ऐसा नहीं लगता।

यदि तुम मेरे वचन में बने रहोगे, तो तुम सचमुच मेरे शिष्य हो। तुम सत्य को जानोगे, और सत्य तुम्हें स्वतंत्र करेगा। आगे जो कुछ भी हुआ, वह निश्चित रूप से झूठे विश्वास को दर्शाता है।

तुम शैतान की औलाद हो। एक मिनट रुको। हम कभी गुलाम नहीं रहे।

क्या आप वास्तव में रोम के जागीरदार के रूप में अपनी वर्तमान स्थिति से अनजान हैं? और आपका स्थानीय शासक एक अर्ध-नस्ल का यहूदी है जो बस पागल है। ओह, मेरे शब्द। तो इस बारे में क्या? 31 विश्वास की बात करता है।

आगे की आयतें दिखाती हैं कि यह बहुत अपर्याप्त है। और मुझे लगता है कि शायद 30 उसी समूह की बात करते हैं। अगर नहीं, तो कोई बात नहीं।

मुझमें अभी भी अपर्याप्त विश्वास है, जिस पर मैंने विश्वास करना और यूहन्ना के सुसमाचार को पढ़ना शुरू नहीं किया। मेरा विश्वास करो, मैंने इसे नहीं देखा। मैंने इसे यूहन्ना के सुसमाचार से पढ़ा।

यीशु के बाद की आयतें स्वीकार करती हैं कि वे सचमुच खून से अब्राहम की संतान हैं, लेकिन वे विश्वास और कर्मों से अब्राहम की संतान नहीं हैं। वे झूठे और हत्यारे हैं, झूठे। ऐसा कैसे? वे परमेश्वर के हत्यारे से लाए गए सत्य को स्वीकार नहीं करते।

ऐसा कैसे? वे अपने दिलों में उससे नफरत करते हैं और उसे मारना चाहते हैं। आखिरी उदाहरण, एक और उदाहरण, यह है कि मैं नहीं हूँ, मैं नहीं हूँ, मैं संपूर्ण होने का दावा नहीं करता, लेकिन तीन बड़ी बातें हैं 12. मुझे लगता है कि अध्याय चार में, वैसे, गैलीलियों ने उसका स्वागत किया, लेकिन उसने सिर्फ इतना कहा कि एक नबी को अपने देश में कोई सम्मान नहीं मिलता।

मुझे लगता है कि ये 12:42 और 43 स्पष्ट हैं। फिर भी, हालाँकि यशायाह ने ये बातें इसलिए कही क्योंकि उसने यीशु की महिमा देखी और उसके बारे में बात की, यशायाह छह में ईश्वरीय दर्शन, हालाँकि कार्सन असहमत हैं, और मैं उनका बहुत सम्मान करता हूँ। ऐसा लगता है कि यह एक क्रिस्टोफ़नी है।

फिर भी, बहुत से लोगों ने, यहाँ तक कि अधिकारियों ने भी, उस पर विश्वास किया। क्यों? फिर भी, 37 के कारण, वे अभी भी उस पर विश्वास नहीं करेंगे। वह यशायाह प्रभु को उद्धृत करता है, जिसने हमारी रिपोर्ट 39 पर विश्वास किया था।

वे आयत 40 पर विश्वास नहीं कर सके। परमेश्वर ने उनकी आँखें अंधी कर दीं और उनके हृदयों को क्षमा कर दिया। यह यशायाह छठा है।

फिर भी, हालाँकि हमारे पास पुराने नियम की पूर्ति करने वाले दुःख और अविश्वास के ये सभी शब्द हैं, लेकिन आयत 39 में इस कैल्विनिस्ट की अक्षमता जैसी बात दिखती है कि वह विश्वास नहीं कर सका। फिर भी, बहुत से लोगों ने, यहाँ तक कि अधिकारियों ने भी, उस पर विश्वास किया। ओह, निश्चित रूप से यह अच्छा है।

इतनी जल्दी नहीं। आप मान लेते हैं कि यह अच्छा है जब तक कि तत्काल संदर्भ में कुछ, आमतौर पर बाद में, आपकी मशीनरी में कोई बाधा न डाल दे, लेकिन फरीसियों के डर से, उन्होंने इसे स्वीकार नहीं किया ताकि उन्हें आराधनालय से बाहर न निकाल दिया जाए। फिर भी, आप उस एक के लिए कुछ उम्मीद रख सकते हैं, लेकिन अगली आयत हत्यारे की तरह दिखती है, क्योंकि वे परमेश्वर से मिलने वाली महिमा से अधिक मनुष्य से मिलने वाली महिमा को पसंद करते हैं।

ओह, अपर्याप्त विश्वास। मुझे उम्मीद है कि वे रास्ते पर हैं। मुझे उम्मीद है कि वे उन यहूदियों में से हैं जो प्रेरितों के काम की पुस्तक में विश्वास करते हैं, जैसा कि पिन्तेकुस्त के बाद के सप्ताह में हजारों लोगों ने किया था।

यीशु के प्रति एक और प्रतिक्रिया। यह वास्तव में उनके शिष्यों की प्रतिक्रिया है। जैसा कि आप सुसमाचार पढ़ते हैं, यीशु सबसे पहले हमारे प्रभु और उद्धारकर्ता हैं।

जैसा कि हम सुसमाचारों में पढ़ते हैं, यीशु दूसरे नंबर पर हैं, परमेश्वर के प्रकटकर्ता, महान भविष्यद्वक्ता जो परमेश्वर को प्रकट करते हैं जो पहले कभी नहीं थे। तीसरा, यीशु हमारा उदाहरण हैं। 15:20 15:18.

अगर दुनिया तुमसे नफरत करती है, तो ध्यान दें, उसने तुमसे नफरत करने से पहले मुझसे नफरत की। अगर तुम दुनिया के होते, 15:19, तो दुनिया तुम्हें अपना समझकर प्यार करती, लेकिन क्योंकि तुम दुनिया के नहीं हो, बल्कि मैंने तुम्हें दुनिया से चुना है। इसलिए, दुनिया तुमसे नफरत करती है।

याद रखो वो शब्द जो मैंने तुमसे कहा था: एक नौकर अपने मालिक से बड़ा नहीं होता। अगर उन्होंने मुझे सताया, तो सोचो क्या होगा? वे तुम्हें भी सताएंगे। दिलचस्प बात यह है कि नकारात्मक प्रतिक्रिया पहले आती है।

यदि उन्होंने मेरी बात मानी, तो तुम्हारी भी मानेंगे। ये सब काम जो मैं अपने नाम के कारण तुम्हारे साथ करने जा रहा हूँ, उनका गलत अर्थ न लगाओ, क्योंकि उन्होंने मेरे भेजनेवाले को नहीं पहचाना। यदि मैं न आता और उनसे बातें न करता, तो वे पाप के दोषी न होते।

यह तकनीकी रूप से सच नहीं है, लेकिन वह तकनीकी नहीं है। यह अतिशयोक्ति है। यह अतिशयोक्ति है।

बेशक, वे पाप के दोषी थे। ओह, लेकिन उन पर अफ़सोस। वे पाप के दोषी थे, लेकिन यीशु के वचनों 22 और कर्मों 24 को अस्वीकार करने के उनके वर्तमान अपराध की तुलना में, उनका पिछला अपराध, जो कि बहुत बड़ा था, कोई अपराध नहीं है।

यीशु का मतलब यह नहीं है कि वे सचमुच निर्दोष थे क्योंकि मत्ती के संक्षिप्त विवरण में, वह वही बात कहता है जो यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला कहता है। पश्चाताप करो, लेकिन स्वर्ग का राज्य निकट है। निर्दोष लोगों को पश्चाताप करने की आवश्यकता नहीं है।

ऐसा नहीं है, ऐसी कोई बात नहीं है। ओह, पतन से पहले आदम और हव्वा और प्रभु यीशु मसीह हैं। मैं समझ गया।

वाँ और पौलुस को 13वाँ उत्तर गिनकर 11 को भी वही उत्तर मिलेंगे।

प्रेरितों के काम की पुस्तक में प्रेरितों का और भी व्यापक उपयोग है। उनके अनुयायी, अध्याय 17. मैं उन सभी के लिए भी प्रार्थना करता हूँ जो 11 के वचन के माध्यम से मुझ पर विश्वास करेंगे।

अंदाज़ा लगाइए कि हमें क्या प्रतिक्रिया मिलेगी? दो परस्पर विरोधी प्रतिक्रियाएँ जो सकारात्मक से ज़्यादा नकारात्मक हैं। मुझे उन चर्चों या व्यक्तियों पर संदेह है जो बेहतर परिणाम पाने के लिए मामले को और भी ज़्यादा बढ़ा-चढ़ाकर पेश करते हैं। यह एक अच्छा विचार नहीं है।

आप लोगों से प्यार करते हैं। आप उनके सामने कोई बाधा नहीं डालते। आप कठोर या निर्दयी या ऐसा कुछ भी नहीं करते।

लेकिन प्रेम में, तुम सच बोलते हो। तुम प्रेम में सच बोलते हो। इफिसियों चार और परमेश्वर से उसके वचन के माध्यम से काम करने की अपेक्षा करो, पुरुषों और महिलाओं को मसीह के पास लाओ।

यीशु के साक्षी हमारा अगला विषय है। अब तक यह कोई आश्चर्य की बात नहीं है कि यह विषय जॉन बैपटिस्ट के साथ प्रस्तावना में शुरू होता है, छंद छह से आठ। हालाँकि यह सच है कि शुरुआत में वचन था, यह सच नहीं है कि शुरुआत में जॉन था।

नहीं, एक व्यक्ति था जिसे परमेश्वर की ओर से भेजा गया था जिसका नाम यूहन्ना है। यूहन्ना की शुरुआत शब्द से बिलकुल अलग है - यूहन्ना शाश्वत नहीं है।

वह नश्वर और क्षणभंगुर है। फिर भी, सुसमाचार में यूहन्ना की सर्वोच्च सेवकाई, यूहन्ना के सुसमाचार में बपतिस्मा देने वाला यूहन्ना पापों की क्षमा के लिए बपतिस्मा के लिए पश्चाताप का उपदेश देने वाले व्यक्ति के रूप में नहीं है। यह एक गवाह के रूप में, एक संकेत के रूप में है।

वह ज्योति की गवाही देता है ताकि लोग विश्वास कर सकें। वह स्वयं ज्योति नहीं था। 1:15, यूहन्ना ने गवाही दी और चिल्लाया।

यह वही है जो मेरे बाद आया। वह मुझसे पहले है क्योंकि वह पहले से अस्तित्व में था। 19 से 51 दिखाता है कि यूहन्ना मसीह नहीं है।

सामयिक शीर्षकों के रूप में संभालने का अनुसरण कर रहा हूँ। यूहन्ना प्रकाश नहीं था। 1:19 से 28।

मैं मसीह नहीं हूँ। मैं पैगम्बर नहीं हूँ। मैं वह नहीं हूँ जो आने वाला था।

मैं एलिय्याह नहीं हूँ। नहीं, नहीं, नहीं। वह प्रकाश की गवाही देने आया था।

यह श्लोक 29 और उसके बाद का है। देखो, परमेश्वर का मेम्ना जो जगत का पाप उठा ले जाता है। मैंने देखा कि आत्मा कबूतर की तरह उस पर उतरी और उस पर ठहर गई।

यह परमेश्वर का पुत्र है। श्लोक 34. मैं हर श्लोक की व्याख्या नहीं कर सकता।

वह प्रकाश नहीं था, वह पहला पैराग्राफ़ है। वह प्रकाश की गवाही देने आया था, दूसरा, ताकि सभी यीशु पर विश्वास कर सकें। तीसरा पैराग्राफ़, 35 से 42 तक।

देखो, परमेश्वर का मेम्रा, जो संसार के पाप को दूर ले जाता है। यहाँ उसके दो शिष्य यीशु का अनुसरण करते हैं। यूहन्ना इस बात से खुश है।

वे आए और उसके साथ रहे। फिर, पहले अध्याय के बाकी हिस्सों में, फिलिप ने नतनएल को बताया कि नतनएल यीशु के पास आ रहा है। फिलिप ने स्पष्ट रूप से सुना था और उसने विश्वास किया, वह उत्सुक था।

वह इस आरंभिक विश्वास में विश्वास करता था। हमें इसे कुछ ऐसा ही कहना चाहिए। और एंड्रयू अपने भाई पीटर को बताता है।

और वैसे भी, अध्याय एक के बाकी हिस्से को यीशु के गवाह होने के लिए आसानी से प्रदर्शित किया जा सकता है। मुख्य पाठ मुख्य पाठ अध्याय 5, 31, से 47 है। अगर मैं अपने बारे में गवाही देता हूँ, तो मेरी गवाही सच्ची नहीं है।

यह उनके बाद के कथन का मौखिक विरोधाभास है, लेकिन वास्तविक नहीं है। उनका मतलब है कि इसका मतलब वही है जो ESV कहता है, उन्होंने केवल शब्द को पाठ में जोड़ दिया। अगर मैं अकेला अपने बारे में गवाही देता हूँ, अगर मैं पिता की गवाही के विपरीत गवाही देता हूँ, या पिता की गवाही के बिना, तो कोई दूसरा है जो मेरे बारे में गवाही देता है।

और मैं जानता हूँ कि उसकी गवाही सच है। वह पिता है। और जॉन, उसने 35 लोगों के माध्यम से गवाही दी।

मेरी गवाही इससे भी बड़ी है, क्योंकि मैं वही ईश्वरीय काम करता हूँ जो पिता ने मुझे करने को दिया है। जो काम मैं करता हूँ वे ही मेरे बारे में गवाही देते हैं कि पिता ने मुझे भेजा है।

यह एक बड़ी बात है। दूसरे शब्दों में, अध्याय एक अवतार के बारे में बताता है, और बाकी सुसमाचार इसे मानता है। और जिस पिता ने मुझे भेजा है, उसने खुद मेरे बारे में गवाही दी है।

उसकी आवाज़ तुमने कभी नहीं सुनी। उसका रूप तुमने कभी नहीं देखा। और उसका वचन तुम्हारे मन में स्थिर नहीं रहता, क्योंकि तुम उस पर विश्वास नहीं करते जिसे उसने भेजा है।

तुम शास्त्रों में खोज करते हो क्योंकि तुम सोचते हो कि उनमें तुम्हें अनन्त जीवन मिलेगा। और यह गलत नहीं है। और ये वही हैं जो मेरी गवाही देते हैं।

फिर भी तुम मेरे पास आने से इनकार करते हो ताकि तुम्हें जीवन मिल सके। मैं लोगों से महिमा प्राप्त नहीं करता, लेकिन मैं जानता हूँ कि तुम्हारे भीतर परमेश्वर के लिए प्रेम नहीं है। ये कठोर शब्द हैं, लेकिन ये दयालु शब्द हैं।

नाम से आया हूँ, तुम मुझे स्वीकार नहीं करते। यदि कोई दूसरा अपने नाम से आता है, तो तुम उसे स्वीकार करोगे। जब तुम एक दूसरे से महिमा प्राप्त करते हो और एकमात्र परमेश्वर से मिलने वाली महिमा की तलाश नहीं करते हो, तो तुम कैसे विश्वास कर सकते हो? यहाँ पूरे नए नियम में सबसे बड़ी चुटकियों में से एक है।

यह मत सोचो कि मैं पिता के सामने तुम पर आरोप लगाऊंगा। एक तो है जो तुम पर आरोप लगाता है, अर्थात् मूसा। हे मेरे वचन!

चलो अंधे आदमी को पकड़ते हैं। तुम इस आदमी के शिष्य हो। हम मूसा के शिष्य हैं।

अरे हाँ? इसे देखो। मूसा, जिस पर तुमने अपनी आशा रखी है। यह, यह बहुत विडंबनापूर्ण है।

इसमें व्यंग्य भरा हुआ है। अगर आप मूसा पर विश्वास करते हैं तो यह व्यंग्यात्मक है। अरे, समय समाप्त हो गया।

मैं आपको बताता हूँ कि, जो कुछ भी सच है, ये लोग ज्यादातर यही मानते हैं कि वे मूसा के लिए मर सकते हैं। मूसा, क्या सब कुछ है? लेकिन इसमें वे यीशु पर विश्वास नहीं करते। वे मूसा पर विश्वास नहीं करते।

अगर आप मूसा पर विश्वास करते हैं, तो आप मुझ पर भी विश्वास करेंगे क्योंकि उसने मेरे बारे में लिखा है। लेकिन अगर आप उसके लिखे पर विश्वास नहीं करते, तो आप मेरे शब्दों पर कैसे विश्वास करेंगे? यह चौंकाने वाली बात है। यही वह बात है जो उन्हें सुनने की ज़रूरत है।

और यीशु चापलूसी नहीं करता। ओह, वह बच्चों के साथ कोमल है। वह वहाँ कोमल है जहाँ कोमलता की आवश्यकता होती है।

लेकिन वह कठोर है, और इसी के लिए उसे बुलाया गया है। और वह दयालु है। यहाँ मुख्य गवाह पाठ है।

पिता यीशु की गवाही देते हैं। यूहन्ना बपतिस्मा देनेवाला यीशु की गवाही देता है। यीशु के काम यीशु की गवाही देते हैं।

यीशु यीशु की गवाही देते हैं। पुराने नियम में यीशु की गवाही दी गई है। मुझे लगता है कि शायद पाँच गवाह हैं।

पिता, यीशु, कार्य, पुराना नियम, यूहन्ना। पाँचवाँ। अध्याय 15 के अंत में, पिता, मुझे खेद है, पवित्र आत्मा और शिष्य यीशु की गवाही देते हैं।

हाँ, यह मेरे नोट्स में है। ठीक है, अध्याय आठ वह दूसरी जगह है जहाँ हमने प्रस्तावना में इस गवाह विषय को पेश किया है, बेशक, अध्याय एक के बाकी हिस्सों में जारी रखा है। यह थोड़ा असामान्य है।

लेकिन यहाँ अध्याय आठ में, यीशु कहते हैं, पिता यीशु की गवाही देते हैं। अगर मैं भी अपने बारे में गवाही देता हूँ, पद 14, तो मेरी गवाही सच है। वह पद 17 में खुद को पिता के साथ जोड़ता है, जिसने उसे भेजा था।

तेरी व्यवस्था में लोगों के लिए गवाही सच है। मैं और पिता मेरी गवाही देते हैं। हमने पहले भी ऐसा देखा है।

वहाँ, यह सबसे महत्वपूर्ण गवाह हैं, पिता और पुत्र। जॉन के सुसमाचार में द्वित्ववादी सद्भाव सिखाया जाता है क्योंकि जॉन आमतौर पर पेंटेकोस्ट के बाद आत्मा को जिस तरह से देखता है। चौथे सुसमाचार में प्रमुख व्यक्ति यीशु की गवाही देते हैं।

मैं सिर्फ उनका उल्लेख करूंगा। 4:39, कि बहुत से सामरियों ने उस स्त्री की गवाही के कारण, अर्थात् उस सामरी स्त्री की गवाही के कारण विश्वास किया। 9, 15, 17, 25, 30, और 33.

गवाह कौन है? भूतपूर्व अंधा आदमी। यह बहुत सारी आयतें हैं। 38 भी।

ओह, मेरा वचन। बार-बार, वह यीशु की गवाही देता है। 11, 37।

27, क्षमा करें। यूहन्ना 11:27. यह मार्था है।

हाँ, प्रभु, मेरा मानना है कि आप मसीह हैं, परमेश्वर के पुत्र, जो दुनिया में आ रहे हैं। यह उद्देश्य कथन है जो उद्देश्य कथन से पहले ही पूरा हो गया है। मार्था, यीशु के अंतिम गवाह पवित्र आत्मा और शिष्य हैं।

और, बेशक, ये दोनों एक साथ चलते हैं, महिमा की पुस्तक में 15 का अंत। जब सहायक आएगा, जिसे मैं पिता की ओर से तुम्हारे पास भेजूँगा, सत्य का आत्मा जो पिता से निकलता है, वह मेरे बारे में गवाही देगा। और तुम भी गवाही दोगे क्योंकि तुम शुरू से ही मेरे साथ रहे हो।

फिर, अध्याय 20:19 में, निम्नलिखित एक ऐसा अंश है जिसे हम और अधिक विस्तार से विकसित करेंगे। लेकिन यीशु शिष्यों को दिखाता है, पुनर्जीवित मसीह उन्हें कलंक दिखाता है, उसके हाथों और बाजू पर निशान। वह उन पर साँस लेता है, जो उत्पत्ति के पहले दो अध्यायों में आदम के निर्माण की प्रतिध्वनि करता है।

और उसने कहा, पवित्र आत्मा को ग्रहण करो। यदि तुम किसी के पापों को क्षमा करते हो, तो वे क्षमा किये जाते हैं। यदि तुम किसी को क्षमा नहीं करते हो, तो वह क्षमा नहीं की जाती है।

मैं बाद में इस पर और विस्तार से काम करूँगा, लेकिन अभी के लिए, यह एक भविष्यवाणी का कार्य है, साँस लेना। यह पिन्तेकुस्त की प्रत्याशा है। और एक बार फिर, अध्याय 15 की तरह, सत्य की आत्मा मेरी गवाही देगी, और आप भी देंगे।

यहाँ, वह वही बात कहता है। यहाँ, वह वही बात दिखाता और कहता है। आप नयेपन और सामर्थ्य में आत्मा को प्राप्त करने जा रहे हैं।

तुम मेरे गवाह बनोगे। और आत्मा की शक्ति में तुम्हारे वचन से लोगों को क्षमा किया जाएगा। जो लोग विश्वास करते हैं और जो अन्य हैं उन्हें क्षमा नहीं किया जाएगा।

जो लोग मसीह को अस्वीकार करते हैं। हमारे अगले व्याख्यान में, हम चौथे सुसमाचार से यीशु या क्राइस्टोलॉजी की तस्वीरों से शुरुआत करेंगे।

यह डॉ. रॉबर्ट ए. पीटरसन द्वारा जोहानिन धर्मशास्त्र पर उनके शिक्षण में है। यह सत्र 10 है, यीशु के प्रति प्रतिक्रियाएँ, यीशु के साक्षी।